



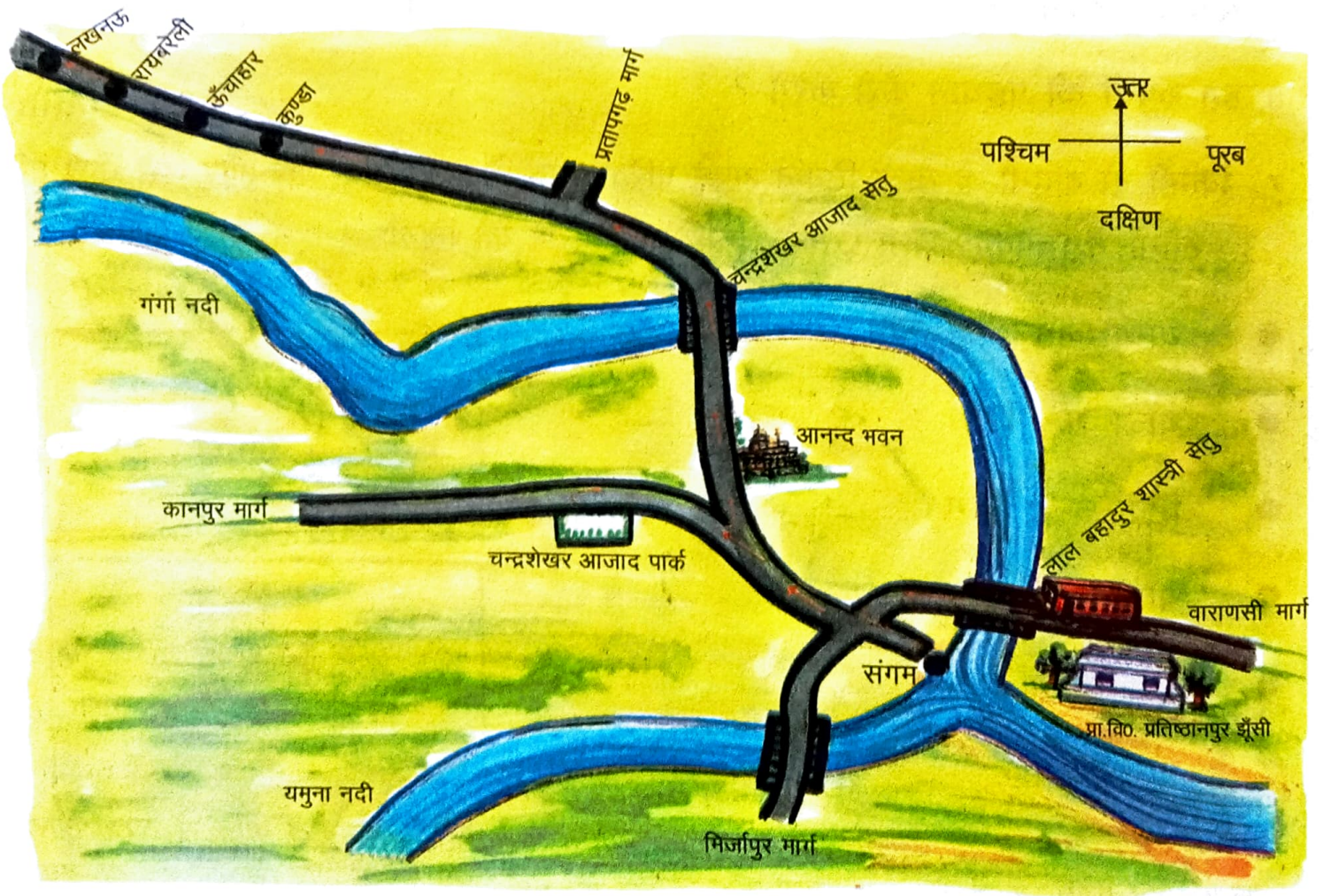
81PB2Z

14

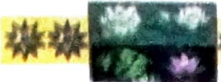
लतिका की डायरी

वह दिन याद कर के आज भी मैं खुशी से झूम उठती हूँ, जब हमारे प्रधानाध्यापक जी ने यह खबर दी कि हम लोगों को प्रयागराज एवं अपने प्रदेश की राजधानी लखनऊ का भ्रमण कराया जाएगा।

निश्चित तिथि को हम सभी जोश और उत्साह के साथ अपने-अपने बैग लेकर विद्यालय पहुँचे। बस पर चढ़ते ही शिक्षिका ने भ्रमण के 'रूट मैप' (मार्ग मानचित्र) द्वारा सबको भ्रमण कार्यक्रम के बारे में बताया और साथ ही यात्रा के लिए कुछ निर्देश भी दिए।



हमारी बस प्राथमिक विद्यालय प्रतिष्ठानपुर झूँसी से प्रयागराज शहर की ओर चल पड़ी। बस संगम तट से थोड़ा पहले रुक गई। सभी बच्चे बस से उतर कर संगम के किनारे पहुँचे।



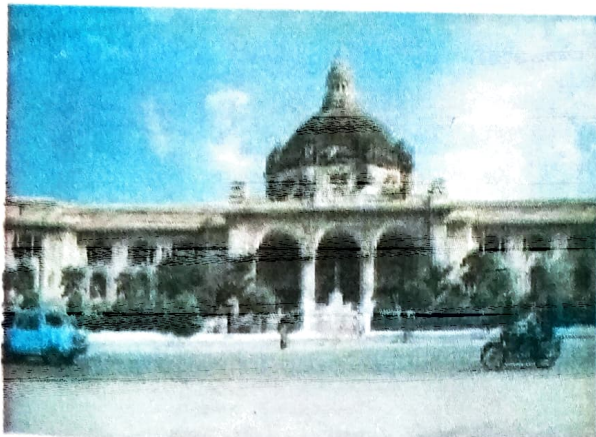
यहाँ गंगा, यमुना एवं सरस्वती नदियाँ मिलती हैं। इसलिए इसे संगम कहा जाता है। प्रत्येक वर्ष माघ माह में यहाँ पर मेला लगता है तथा प्रत्येक छह वर्ष पर कुम्भ और बारह वर्ष पर महाकुम्भ का मेला लगता है। यहीं पर सम्राट अकबर द्वारा बनवाया हुआ किला भी स्थित है।

संगम तट के बाद हम लोग चन्द्रशेखर आजाद पार्क (अल्फ्रेड पार्क) पहुँचे। इसमें चन्द्रशेखर आजाद की विशाल प्रतिमा लगी थी। यहाँ विभिन्न प्रकार के पेड़ एवं औषधीय पौधे देखने को मिले। यहीं पर संग्रहालय और एक प्राचीन सार्वजनिक पुस्तकालय देखा।



आनन्द भवन

हम सबने आनन्द भवन व स्वराज भवन भी देखा। आनन्द भवन से ही लगा हुआ जवाहर नक्षत्रशाला भी है। जहाँ हमने आकाश मण्डल में तारों की स्थिति की जानकारी प्राप्त की।



विधानसभा भवन

हम दोबारा बस में सवार हुए। सब लोग अपनी-अपनी सीट पर बैठ गए। हम सब लखनऊ शहर की ओर निकल चुके थे। सभी अपने साथ लाए बिस्किट, नमकीन, लीची, अमरुद आदि आपस में बाँट कर खा रहे थे। शिक्षिका के निर्देश के अनुसार खाली पैकेट एवं छिलके एक अलग थैली में इकट्ठा कर रहे थे। बातचीत करते हुए रास्ते का पता ही नहीं चला। हमारी बस लखनऊ शहर के अन्दर प्रवेश कर चुकी थी।

गोमती नदी के किनारे बसा लखनऊ हमारे प्रदेश की राजधानी है। हमने लखनऊ में विधानसभा भवन देखा जहाँ प्रदेश के मुख्यमंत्री, उनके मंत्रिमण्डल के मंत्री और विधानसभा के सदस्य बैठते हैं। यहाँ की प्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारतों में रेजीडेन्सी, रूमी दरवाजा, छोटा इमामबाड़ा, बड़ा इमामबाड़ा प्रमुख हैं। बड़े इमामबाड़े में भूल-भुलैया है। इसे अवध के नवाबों ने बनवाया था।

भूल-भुलैया से निकलकर हम चिड़ियाघर पहुँचे। चिड़ियाघर में देश-विदेश के पशु-पक्षी

हैं। लखनऊ की चिकन की कढ़ाई विश्व प्रसिद्ध है। कुटीर उद्योग के रूप में चिकन की कढ़ाई अनेक घरों में होती है। यह शहर अपने नवाबों, रेवड़ियों और मुगलई पकवानों के लिए देश-विदेश में प्रसिद्ध है।



लखनऊ महोत्सव

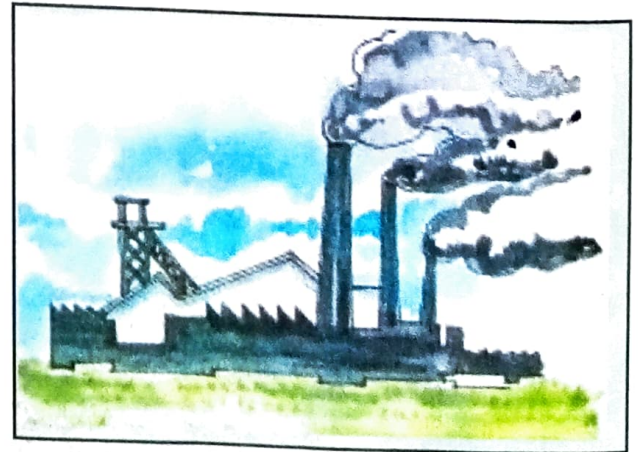
सायंकाल हम सब 'लखनऊ महोत्सव' देखने गए। इस महोत्सव में प्रदेश के अनेक जनपदों के स्टॉल लगे थे। यहाँ विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था।

मथुरा जनपद के स्टॉल से किसी ने बाँसुरी खरीदी तो किसी ने कृष्ण और राधा की मूर्ति खरीदी। मथुरा के लोग स्टॉल पर आने वाले सदस्यों के अभिवादन में राधे-राधे बोल रहे थे। मथुरा को कृष्ण की जन्मस्थली के रूप में जाना जाता है।

इन्हें भी जानें—

- बाँसुरी मथुरा (ब्रज) का प्रमुख वाद्य यन्त्र है। ब्रज लोक संगीत में ढोल, मृदंग, झाँझ, मंजीरा, ढप, नगाड़ा, पखावज, एकतारा आदि वाद्य यन्त्रों का प्रचलन है।
- द्वारिकाधीश मंदिर एवं इस्कान मंदिर की भव्यता विश्व प्रसिद्ध है।

अगला स्टॉल कानपुर का था। वहाँ विभिन्न प्रकार के मिल, कारखानों एवं मशीनों के मॉडल लगे थे जिसे देखकर कानपुर के औद्योगिक नगर होने का आभास हुआ। स्टॉल पर सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र तथा चमड़े के विभिन्न प्रकार के सामान मिल रहे थे।



कानपुर को दो जिलों में बाँटा गया है—कानपुर नगर और कानपुर देहात। कानपुर शहर गंगा नदी के तट पर स्थित है। यहाँ चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) है।





टेराकोटा के खिलौने

प्रदर्शनी के एक पंडाल के बाहर लाल पकी मिट्टी की कलात्मक मूर्तियाँ, हाथी, घोड़े, फूलदान एवं अन्य खिलौने लगे थे। हम सबने अपनी-अपनी पसंद के खिलौने खरीदे। यह स्टॉल गोरखपुर का था। गोरखपुर राप्ती नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। यहाँ गोरखनाथ मंदिर, गीताप्रेस परिसर, आरोग्य मन्दिर, रामगढ़ ताल, गीता वाटिका आदि दर्शनीय इमारतें एवं स्थल हैं। यहाँ का सूती वस्त्र उद्योग प्रसिद्ध है। कई चीनी मिलों के अलावा यहाँ उर्वरक का बड़ा कारखाना भी है। शिक्षा के क्षेत्र में दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय अपनी उपलब्धियों के लिए विख्यात है। देश का सबसे लम्बा रेलवे प्लेटफार्म गोरखपुर का है।

गोरखपुर के पंडाल के पास ही वाराणसी का पंडाल लगा था, जहाँ आधुनिक तकनीक द्वारा चलचित्र के माध्यम से वाराणसी दर्शन कराया जा रहा था। वाराणसी से लगभग 8 किलोमीटर दूर सारनाथ में बुद्ध ने अपने पाँच शिष्यों को सबसे पहले बौद्ध धर्म की शिक्षा दी थी। सारनाथ में एक राजकीय संग्रहालय भी है। जहाँ सम्राट अशोक द्वारा बनवाए गए चार सिंहों वाला स्तम्भ भी रखा है। पीठ से पीठ सटाए यही चार सिंह हमारा राजचिह्न है।



राजचिह्न

महामना मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय यहीं स्थित है। चलचित्र पर दशाश्वमेध घाट की गंगा आरती का संगीतमय कार्यक्रम देखना हम सभी को बहुत अच्छा लगा। हम सबने विश्वनाथ मंदिर के साथ ही ज्ञानवापी मस्जिद का भी दर्शन किया।

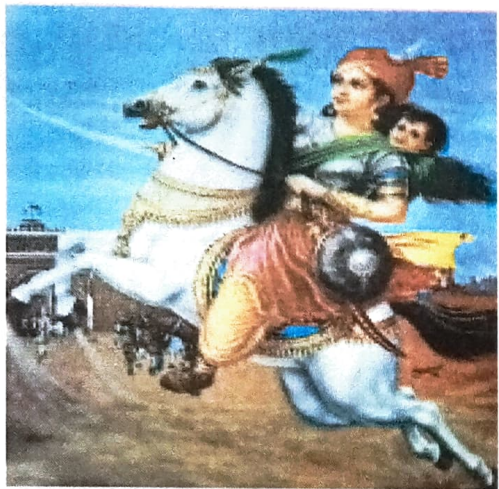


वाराणसी के घाट

प्रसिद्ध शहनाई वादक स्व० बिस्मिल्लाह खाँ, तबला वादक किशन जी महाराज, कथक नर्तक बिरजू महाराज तथा ठुमरी गायिका स्व० गिरिजा देवी ने वाराणसी को विशेष सांस्कृतिक पहचान दी है।

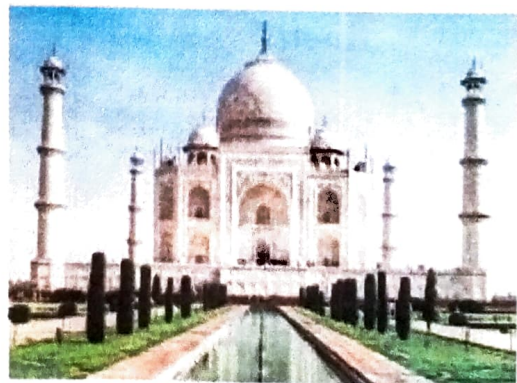
वाराणसी जरी और रेशम के काम के लिए जाना जाता है। यहाँ की साड़ियाँ पूरे देश में प्रसिद्ध हैं। वाराणसी को काशी और बनारस भी कहा जाता है। यह गंगा के किनारे बने घाटों के लिए प्रसिद्ध है।

अब हम सब झाँसी के स्टॉल पर आ गए थे। झाँसी एक ऐतिहासिक शहर है, जो बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। पंडाल में रानी लक्ष्मीबाई की घोड़े पर बैठी हुई मूर्ति सबका ध्यान अपनी ओर खींच रही थी। राजसी कपड़ों, मूर्तियों एवं प्राचीन हथियारों की प्रदर्शनी को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे बुन्देलखण्ड की कहानी कह रहे हैं। झाँसी का किला शहर के मध्य बंगरा नामक पहाड़ी पर स्थित है। यह किला भारत के बेहतरीन किलों में एक है।



रानी लक्ष्मीबाई

आगरा के स्टॉल पर ज्यादा चहल-पहल थी। सामने ही ताजमहल का भव्य चित्र लगा था जिसके सामने लोग अपनी फोटो खिंचवा रहे थे। यमुना नदी के तट पर स्थित ताजमहल को मुगल बादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था। ताजमहल विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। यह इमारत विश्व की धरोहर है और देश-विदेश में प्रसिद्ध है। आगरा के समीप स्थित फतेहपुर सीकरी को मुगल बादशाह अकबर ने बसाया था। यहाँ का बुलन्द दरवाजा, पंचमहल एवं शेख सलीम चिश्ती की दरगाह प्रसिद्ध है।



ताजमहल

महोत्सव में विभिन्न अंचलों की खाने-पीने की चीजों का स्टॉल अन्य स्टॉल से थोड़ा हटकर लगाया गया था। हम सबने बनारस का मलइयो (एक प्रकार का दूध से बना व्यंजन) और लखनऊ का मुगलई पराठा खाया। बनारस की कचौड़ी, जलेबी की दुकान पर बहुत भीड़ थी। कुछ लोगों ने आगरे का पेठा और लखनऊ की रेवड़ियाँ खरीदी। मथुरा का पेड़ा भी बहुत स्वादिष्ट था।



लखनऊ महोत्सव में मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक मंच बना था। मंच पर आयोजित कार्यक्रमों में मथुरा की प्रसिद्ध गायकी 'रसिया' के बाद ठुमरी का प्रस्तुतीकरण हुआ। मंच पर तबला और शहनाई की जुगलबंदी भी देखने को मिली। झाँसी के बुन्देलखण्डी लोकनृत्य के कलाकारों ने परम्परागत वेशभूषा में नृत्य प्रस्तुत करके सभी दर्शकों का मन मोह लिया।



बुन्देलखण्डी लोकनृत्य

अब हमारी वापसी का समय हो रहा था। हम सब बस में सवार हुए। बस प्रयागराज के लिए चल पड़ी। रात का सफर था, फिर भी किसी को नींद नहीं आ रही थी। सब बच्चे तरह-तरह की बातें कर रहे थे—खाने—पीने की चीजों के बारे में, बोली—भाषा के बारे में। बातों बातों में ही कब प्रयागराज आ गया पता ही नहीं चला।

भाषाएँ अनेक — हम सब एक

हमारे प्रदेश के अलग-अलग हिस्से में कई तरह की भाषाएँ बोली जाती हैं। जैसे—

खड़ी बोली

तुम्हारा क्या नाम है ?

आओ बैठो।

कहाँ जा रहे हो ?

ब्रज

तिहारौ कहा नाम है ?

आवौ बैठो।

कितै कू जाइ रहयो है ?

अवधी

तोहार का नाँव अहै ?

आवा बइठा।

कहाँ जात अहा ?

बुन्देली

तुम्हार नाम काय ?

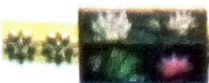
आओ बैठौ।

कहाँ आय जात हौ ?



पता करें —

आपके आस-पास बोली जाने वाली भाषा को क्या कहते हैं ? यह और कहाँ-कहाँ बोली जाती है ?





अभ्यास

1. सही जोड़े बनाइए -

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT)	लखनऊ
भूल-भुलैया	कानपुर
ताजमहल	गोरखपुर
दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय	आगरा
सारनाथ	प्रयागराज
आनन्द भवन	वाराणसी

2. नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त स्थान भरें—

- (क) राप्ती नदी के पूर्वी तट परबसा है।
(ख) आगरा का ताजमहल नदी के तट पर बना है।
(ग) कानपुर नगर है।
(घ) लखनऊ नदी के किनारे बसा है।
(ङ.) झाँसी क्षेत्र में आता है।
(च) मथुरा की प्रसिद्ध गायकी है।
(ज) संगम शहर में स्थित है ?
(झ) बिस्मिल्लाह खान प्रसिद्ध वादक थे।

3. पृ० सं० 103 पर अंकित मानचित्र को देखिए और लखनऊ महोत्सव में जिन-जिन जनपदों के स्टॉल देखे हैं, उन्हें चिह्नित करें और उन जनपदों से लगे एक-एक अन्य जनपदों के नाम अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखें।

4. नीचे दी गई तालिका में कुछ शहरों के नाम लिखे हैं उनके सामने वहाँ की प्रसिद्ध चीजों/इमारतों के नाम लिखें।

शहर	प्रसिद्ध चीजें
लखनऊ	
आगरा	
मथुरा	
कानपुर	
झाँसी	
गोरखपुर	

5. सोचें और लिखें –

- आपने पाठ में दिए गए विभिन्न स्थलों के बारे में जाना। आप किस स्थल की यात्रा करना चाहेंगे और क्यों।
- यदि आपको अपने परिवार के साथ किसी यात्रा पर जाना हो तो अपने छोटे भाई-बहनों को क्या निर्देश देंगे ? लिखिए।



प्रोजेक्ट वर्क

6. निम्नलिखित बोलियाँ व भाषाएँ किन जगहों पर बोली जाती हैं ? पता करें और लिखें।

भाषा	बोले जाने वाले स्थान (जिले)
ब्रज	
अवधी	
बुन्देली	
कुमाऊँनी	
भोजपुरी	

